सूक्ति-सुधा

[संस्कृत की अनेक विशिष्टताओं में एक यह भी है कि हजारों वर्षों से इसमें अनेक सुन्दर वाक्य प्रचलित रहे हैं जो मानव जीवन को सन्मार्ग दिखाते हैं । ये वाक्य कहीं-कहीं तो प्रसिद्ध साहित्यिक तथा नीतिपरक ग्रन्थों में प्रयुक्त हैं तो कुछ ऐसे भी हैं जिनके रचयिता का नाम अन्धकार में है । संस्कृत पढ़े हुए व्यक्ति प्रायः अपने वार्तालापों में इन सुन्दर वचनों (सूक्तियों) का प्रयोग तात्कालिक स्थिति के निरूपण के लिए अथवा अपने कथ्य की पुष्टि के लिए करते हैं । प्रस्तुत पाठ में अनेक सूक्तियाँ संकलित की गयी हैं जिनका जीवन में महत्त्व है । इनका उपयोग निबन्धों या अन्य रचनाओं की सौन्दर्यवृद्धि के लिए हो सकता है । किसी भी कथ्य की पुष्टि समुचित सूक्ति से करने पर उसका व्यापक प्रभाव होता है ।]

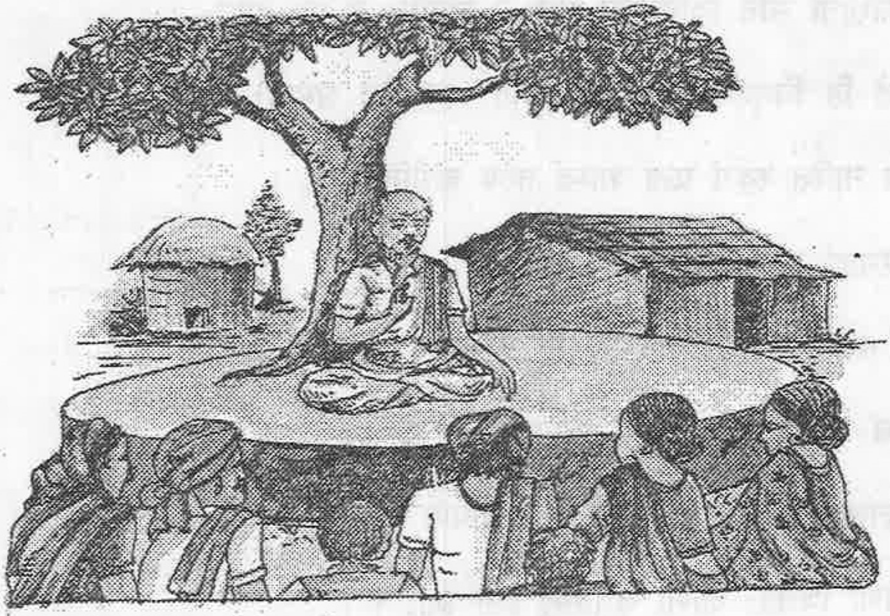

1. धर्मो रक्षति रक्षितः ।
2. आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।
3. सर्वारम्भाः तण्डुलप्रस्थमूलाः ।

4. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः ।

5. सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थसिद्धिः ।

6. मितं च सारं च वचो हि वाग्मिता ।

7. परसदननिविष्टः को लघुत्वं न याति ।

8. हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः ।

9. समय एव करोति बलाबलम् ।

10. क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः ।

11. परोपदेशवेलायां शिष्टाः सर्वे भवन्ति हि ।

12. विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः ।

13. वृणते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः ।

14. यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।

15. शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् ।

16. सतां सद्भिः संगः कथमपि हि पुण्येन भवति ।

17. मानवं पुत्रवद् वृक्षास्तारयन्ति परत्र च ।

18. ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति ।

19. अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ।

20. आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।

शब्दार्थाः :

रक्षितः	–	बचाया गया
आहारे	–	भोजन में
व्यवहारे	–	लेन-देन में, सामान्य क्रिया-कलाप में
त्यक्तलज्जः	–	लज्जा को छोड़ने वाला
भवेत्	–	होता है
सर्वारम्भाः	–	सभी कार्य
तण्डुलप्रस्थमूलाः	–	एक पसेरी चावल (भोजन) के लिए ही होते हैं
सकालार्थसिद्धिः	–	सभी अर्थों की सिद्धि
मितम्	–	संक्षिप्त
सारम्	–	तथ्य से भरा हुआ
वचः	–	वाणी
वाग्मिता	–	वाक्पटुता
परसदननिविष्टः	–	दूसरे के घर में रहने वाला
लघुत्वम्	–	महत्त्व से रहित स्थिति को
हितम्	–	भला करने वाला, कल्याणकारी
मनोहारि	–	सुन्दर, प्रिय
बलाबलम्	–	बलवान और निर्बल (बलच्य अबलच्य तयोः समाहारः)

नवतामुपैति	–	नवीनता को प्राप्त करता है
विक्रियन्ते	–	विकृत होते हैं, बदलते हैं
चेतांसि	–	चित्त, मन, दिमाग
धीराः	–	धैर्यवान् लोग
रमणीयतायाः	–	सुन्दरता का
परोपदेशवेलायाम्	–	दूसरे को उपदेश देने के समय
शिष्टाः	–	विनम्र, अच्छे आचरण वाले
सर्वे	–	सभी
विकारहेतौ सति	–	विकृति का कारण रहने पर भी
वृणते	–	खोज लेती हैं, चुन लेती हैं
विमृश्यकारिणम्	–	विवेकी, सोच समझ कर कार्य करने वालों को
गुणलुब्धाः	–	गुण के लोभी, गुणों से आकृष्ट
प्रज्ञा	–	ज्ञान, बुद्धि
आद्यम्	–	पहला
सताम्	–	सज्जनों की
सद्भिः	–	सज्जनों के साथ
तारयन्ति	–	पार करते हैं / रक्षा करते हैं
परत्र	–	परलोक में, जीवन के बाद
ज्ञानलवदुर्विदग्धम्	–	अल्पज्ञान से कुतर्क करने वाला

रञ्जयति	–	प्रसन्न करता है
वित्ततः	–	धन से
वृत्ततः	–	आचरण से
आत्मनः	–	अपने
प्रतिकूलानि	–	विपरीत (बहुवचन)
परेषाम्	–	दूसरों के प्रति
समाचरेत्	–	आचरण करें
हतः	–	मारा गया

सन्धिविच्छेदः/पदविच्छेदः

सर्वारम्भाः	–	सर्व + आरम्भाः
सकलार्थसिद्धिः	–	सकल + अर्थसिद्धिः
दुर्लभम्	–	दुः + लभम्
बलाबलम्	–	बल + अबलम्
नवतामुपैति	–	नवताम् + उपैति
तदेव	–	तत् + एव
परोपदेशवेलायाम्	–	पर + उपदेशवेलायाम्
शरीरमाद्यम्	–	शरीरम् + आद्यम्
वृक्षास्तारयन्ति	–	वृक्षाः + तारयन्ति
ज्ञानलवदुर्विदग्धम्	–	ज्ञानलवदुः + विदग्धम्
वृत्ततस्तु	–	वृत्ततः + तु

समाचरेत् – सम् + आचरेत्

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

रक्षितः	=	√रक्ष् + क्तः
याति	=	√या, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
उपैति	=	उप + √इ लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
भवेत्	=	√भू, विधिलिङ्, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
करोति	=	√कृ, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, एकवचनम्
भवन्ति	=	√भू, लट्लकारः, प्रथमपुरुषः, बहुवचनम्

अभ्यासः

मौखिकः

1. **अधोलिखितानां पदानाम् अर्थं वदत–**

व्यवहारे, मितम्, सारम्, वाग्मिता, चेतांसि, वृणते, परेषाम्

2. **उदाहरणानुसारेण भावबोधिकां सूक्तिं वदत –**

यथा–अपने लिए जो उचित नहीं है उसे दूसरे के लिए नहीं करना चाहिए ।

उत्तर – आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ।

(क) कल्याणकारी और मनोहारी वचन (वाणी) दुर्लभ है ।

....

(ख) समय ही किसी को बलवान् या निर्बल बनाता है ।

....

(ग) गुणलोभी सम्पत्तियाँ विवेकशील व्यक्ति को चुन लेती हैं ।

....

(घ) सत्य और परिश्रम से सभी कार्य सिद्ध होते हैं ।

....

(ङ) सभी कार्यों का मूल एक पसेरी चावल है ।

....

लिखितः

1. कोष्ठप्रदत्तेषु शुद्धं शब्दं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) .... रक्षति रक्षितः । (धर्मः/ पापम्)

(ख) परसदननिविष्टः को ....न याति । (गुरुत्वम् /लघुत्वम्)

(ग) हितं मनोहारि च .... वचः ।(सुलभम्/दुर्लभम्)

(घ) .... एव करोति बलाबलम् । (नरः/समयः)

(ङ) आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः .... भवेत् । (सुखी/दुःखी)

2. **अधोलिखितानि वाक्यानि पाठाधारेण सत्यम् (√) असत्यं (×) वा चिह्नी-कुर्वन्तु –**

(क) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम् । ( )

(ख) परोदेशवेलायां सर्वे शिष्टाः न भवन्ति । ( )

(ग) सतां सद्भिः संगः अपुण्येन भवति । ( )

(घ) आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां समाचरेत् । ( )

(ङ) सत्यश्रमाभ्यां सकलार्थसिद्धिः । ( )

3. **'क' स्तम्भस्य वाक्यैः सह 'ख' स्तम्भमस्य वाक्यानि योजयत –**

'क'	'ख'
(क) हितं मनोहारि च	(i) धर्मसाधनम् ।
(ख) शरीरमाद्यं खलु	(ii) तण्डुलप्रस्थमूलाः ।
(ग) समय एव करोति	(iii) परेषां न समाचरेत् ।
(घ) सर्वारम्भाः	(iv) दुर्लभं वचः ।
(ङ) आत्मनः प्रतिकूलानि	(v) रक्षितः ।
(च) धर्मो रक्षति	(vi) बलाबलम् ।

4. **उदाहरणानुसारेण द्विवचनरूपं लिखत**

एकवचनम्	–	द्विवचनम्
यथा भवति	–	भवतः
(क) चलामि	–	
(ख) अस्ति	–	
(ग) दहति	–	
(घ) तिष्ठसि	–	
(ङ) भविष्यति	–	

5. **निम्नलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन लिखत –**

(क) आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः कीदृशः भवेत् ?

(ख) आद्यं धर्मसाधनम् किम् भवति ?

(ग) सतां सद्भिः संगः कथम् भवति ?

(घ) हितं मनोहारि च किम् दुर्लभम् ?

(ङ) कः बलाबलं करोति ?

(च) सत्यश्रमाभ्यां कस्य सिद्धिः ?

6. अधोलिखितानां पदानां सन्धिविच्छेदं कुरुत–

(क) तदेव = ... + एव ।

(ख) सर्वारम्भाः = सर्व + ... ।

(ग) समाचरेत् = ... + आचरेत् ।

(घ) नवतामुपैति = नवताम् + ...।

(ङ) बलाबलम् = ... + ...

7. विलोमपदानि लिखत–

यथा	पुण्यम्	– पापम्
(क)	धर्म :	–
(ख)	अस्ति	–
(ग)	सज्जनाः	–
(घ)	सुखम्	–
(ङ)	सत्यम्	–
(च)	गुणाः	–

◆◆◆

व्याकरणं रचना च

(क) प्रत्याहाराणां परिचयः – प्रत्याहार का अर्थ है संक्षेप । संस्कृत के वर्णों को संक्षेप में समझने के लिए वैयाकरण पाणिनि ने प्रत्याहारों का अपने सूत्रों में प्रयोग किया है। प्रत्याहारों का आधार उनके चौदह सूत्र हैं जो क्रमशः स्वरों और व्यञ्जनों को गिनाते हैं। यहाँ इन सूत्रों को स्मरण रखने से प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है, प्रयुक्त प्रत्याहारों में कौन–कौन वर्ण हैं, इन्हें समझा जा सकता है ।

स्वरवर्ण के सूत्र - अ इ उ ण् । ऋ ऌ क् । ए ओ ङ्। ऐ औ च् । (कुल चार सूत्र)

व्यञ्जनवर्ण के सूत्र– ह य व र ट्। ल ण्। ञ म ङ ण न म्। झ भ ञ्। घ ढ ध ष्। ज ब ग ड द श्। ख फ छ ठ थ च ट त व्। क प य्। श ष स र्। ह ल्। (कुल दस सूत्र)

वर्णमाला विषयक इन सूत्रों को प्रत्याहारसूत्र कहा जाता है। अण् प्रत्याहार कहने से अ इ उ –इन तीन वर्णों का बोध हो जाता है। अच् में सभी स्वरवर्ण तथा हल् में सभी व्यञ्जनवर्ण आ जाते हैं। इसीलिए अजन्त (अच् या स्वर से अन्त होने वाला) तथा हलन्त (व्यञ्जन से अन्त होने वाला) इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

प्रत्याहार दो वर्णों का होता है। उसमें दूसरा वर्ण हलन्त रहता है जो चौदह उपर्युक्त सूत्रों में से किसी के अन्तिम वर्ण के रूप में होता है–ण्, क्, ङ्, च्, ट् इत्यादि। प्रत्याहार का पहला अक्षर किसी दूसरे वर्ण के रूप में होता है। जितने वर्णों को हम निर्दिष्ट करना चाहें उतने वर्ण प्रत्याहार में आ जायेंगे। बीच वाले हलन्त को छोड़कर बीच के सभी वर्ण प्रत्याहार में समाविष्ट होते हैं। जैसे अक् कहें तो अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये पाँच वर्ण आ जायेंगे। जैसे जश् कहें तो ज, ब, ग, ड, द–ये सभी तृतीय वर्ण समाविष्ट होते

हैं। इस प्रकार वर्णसमूह को प्रत्याहारों द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है। पाणिनि ने कुल 42 प्रत्याहारों का प्रयोग अपने व्याकरणग्रन्थ (अष्टाध्यायी) में किया है। यहाँ सुविधा की दृष्टि से कुछ प्रत्याहारों और उनके अन्तर्गत आए हुए वर्णों को देखा जा सकता है–

अण् – अ, इ, उ

अक् – अ, इ, उ, ऋ, ऌ

इक् – इ, उ, ऋ, ऌ

एङ् – ए, ओ

एच् – ए, ओ, ऐ, औ

ऐच् – ऐ, औ

खर् – ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स

जश् – ज, ब, ग, ड, द

यण् – य, र, ल, व

अभ्यास:

1. **प्रत्याहार किसे कहते हैं? सोदाहरण समझाएँ।**
2. **निम्नांकित प्रत्याहारों में समाविष्ट वर्णों को लिखें–**

   अच्, हश्, खर्, शल्, यण्, अक्

(ख) सन्धि:

संस्कृत भाषा में दो वर्णों के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। जैसे-गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः। यहाँ पूर्वशब्द (गिरि) के अन्तिम अक्षर "इ" का परवर्ती शब्द (इन्द्रः) के प्रथम अक्षर "इ" के साथ मेल होने पर 'ई' ऐसा विकार हुआ। अतः सन्धि है।

सन्धि के तीन भेद हैं-अच् सन्धि, हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि) तथा विसर्ग संन्धि । स्वर का स्वर से मेल होने पर जो विकार उत्पन्न होता है उसे अच् सन्धि या स्वर सन्धि कहते हैं । अच् सन्धि के मुख्य भेदों को हम यहाँ देखें ।

(i) यण् सन्धि – इको यणचि । इक् प्रत्याहार के वर्णों का यण् प्रत्याहार का वर्ण में परिवर्तन हो जाता है यदि परवर्ती शब्द के आरम्भ में कोई अन्य स्वरवर्ण हो । तदनुसार इ का य्, उ का व्, ऋ का र्, और ऌ का ल् हो जाता है । इक् प्रत्याहार में भी चार वर्ण हैं और यण् प्रत्याहार में भी चार वर्ण हैं । इनका क्रमशः परिवर्तन होता है।

उदाहरण-

नदी + अस्ति = नद्यस्ति

यदि + अपि = यद्यपि

अपि + एकः = अप्येकः

इति + आदि = इत्यादि

अति + आवश्यकः = अत्यावश्यकः

इन सब में इ/ई का य् हो गया है।

अनु + अयः = अन्वयः

मधु + अरिः = मध्वरिः

वधू + आगमनम् = बध्वागमनम्

इन सब में उ/ऊ का व् हो गया है ।

मातृ + आदेशः = मात्रादेशः

पितृ + अंशः = पित्रंशः

ऌ + आकृतिः = लाकृतिः

यहाँ ऋ का र् तथा ऌ का ल् हो गया है।

(ii) दीर्घसन्धि – अकः सवर्णे दीर्घः । अक् (ह्स्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ) यदि
समान वर्ण के साथ मिले तो दीर्घ एकादेश हो जाता है ।

जैसे- अद्य + अपि = अद्यापि

नर + अधमः = नराधमः

देव + आलयः = देवालयः

तथा + अस्तु = तथास्तु

महा + आत्मा: = महात्मा:

विद्या + आलयः = विद्यालयः

यहाँ अ/आ के बाद अ/आ मिलने से 'आ' के रूप में दीर्घ एकादेश हो गया है

अपि + इदम् = अपीदम्

गिरि + ईशः = गिरीशः

अधि + ईश्वरः = अधीश्वरः

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः

यहाँ इ/ई के बाद इ/ई मिलने से ''ई'' के रूप में दीर्घ एकादेश हो गया है ।

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः

भानु + उदयः = भानूदयः

यहाँ उ/ऊ के बाद उ/ऊ होने से 'ऊ' के रूप में दीर्घ एकादेश है।

(iii) गुण सन्धि – आद् गुणः । अ/आ के बाद इ/ई होने से ए, उ/ऊ होने से ओ तथा
ऋ होने से अर् एकादेश हो जाता है ।

जैसे- तव + इदम् = तवेदम्

तथा + इति = तथेति

परम + ईश्वरः = परमेश्वरः

महा + ईशः	=	महेशः
तस्य + उपरि	=	तस्योपरि
सीता + उवाच	=	सीतोवाच
सदा + ऊर्ध्वम्	=	सदोर्ध्वम्
समुद्र + ऊर्मिः	=	समुद्रोर्मिः
परम + ऋषिः	=	परमर्षिः
महा + ऋषिः	=	महर्षिः
उत्तम + ऋणः	=	उत्तमर्णः

(iv) वृद्धि सन्धि – वृद्धिरेचि । अ/आ के बाद ए/ऐ होने से "ऐ" एकादेश होता है, इसी प्रकार अ/आ के बाद ओ/औ होने से "औ" एकादेश होता है । इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं ।

जैसे –

एक + एकम्	=	एकैकम्
तथा + एव	=	तथैव
महा + ऐश्वर्यम्	=	महैश्वर्यम्
महा + ओषधिः	=	महौषधिः
जल + ओघः	=	जलौघः (बाढ़)
हृदय + औदार्यम्	=	हृदयौदार्यम्

(v) अयादि सन्धि–एचोऽयवायावः । एच् प्रत्याहार (ए, ओ, ऐ, औ) का क्रमशः अय्, अव्, आय्, आव् हो जाना अयादि संधि है । किसी भी स्वर के पूर्व ऐसा वर्णविकार होता है जैसे–

ने + अनम्	=	नयनम् (ए का अय्)
शे + अनम्	=	शयनम् (ए का अय)

भो + अनम्	=	भवनम् (ओ का अव्)
पो + अनः	=	पवनः (ओ का अव)
नै + अकः	=	नायकः (ऐ का आय्)
गै + अनम्	=	गायनम् (ऐ का आय्)
पौ + अनः	=	पावनः (औ का आव्)
भौ + अकः	=	भावकः (समीक्षा करने वाला, औ का आव्)

(vi) पूर्वरूप सन्धि – एङः पदान्तादति । पदान्त एङ् प्रत्याहार (ए/ओ) के बाद परवर्ती शब्द अ से आरम्भ हो रहा है तो केवल पूर्व अक्षर के रूप में एकादेश होता है। अर्थात् ए + अ = ए। ओ + अ = ओ।

जैसे –रामे + अपि	=	रामेऽपि
गृहे + अस्मि	=	गृहेऽस्मि
बालको + अयम्	=	बालकोऽयम्
बालो + अहम्	=	बालोऽहम्
सो + अवदत्	=	सोऽवदत्
जातो + अहम्	=	जातोऽहम्

उपर्युक्त उदाहरणों में विसर्ग सन्धि के नियमों से विसर्ग का ओकार हुआ है। इसलिए मूलतः बालकः+अयम्, बालः+अहम्, सः+अवदत्, जातः +अहम्–इसी रूप में सन्धिविच्छेद होगा।

(ग) शब्दरूपाणि

'पितृ' शब्द (पुं.) ऋकारान्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरौ !	हे पितरः !

'गो' शब्द (पुं.–स्त्री.)
ओकारान्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गौः	गावौ	गावः
द्वितीया	गाम्	गावौ	गाः
तृतीया	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
चतुर्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
पंचमी	गोः	गोभ्याम्	गोभ्यः
षष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
सप्तमी	गवि	गवोः	गोषु
सम्बोधन	हे गौः !	हे गावौ !	हे गावः !

'गो' का अर्थ गाय, बैल दोनों हैं, इसीलिए इसका प्रयोग पुंल्लिग–स्त्रीलिंग दोनों में होता है ।

'राजन्' (= राजा)

नकारान्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पंचमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन् !	हे राजानौ !	हे राजानः !

'नदी' शब्द

ईकरान्त

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम्	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्यै	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि ।	हे नद्यौ !	हे नद्यः !

'तत्' (वह) शब्द

पुँल्लिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

'तत्' (वह) शब्द

स्त्रीलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

'तत्' (वह) शब्द

नपुंसकलिंग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

(घ) 1. भू धातु (होना to be) परस्मैपद

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लृट्लकारः (सामान्य भविष्यत्)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतनभूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

2. पा (पिब्) धातु (to drink) परस्मैपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

ऌट्लकारः (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत्
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबेयम्	पिबेव	पिबेम

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिब	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

3. दृश् धातु (देखना to see) परस्मैपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
मध्यम पुरुष	पश्यसिं	पश्यथः	पश्यथ
उत्तम पुरुष	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथः	द्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्यावः	द्रक्ष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपश्यत्	अपश्यताम्	अपश्यन्
मध्यम पुरुष	अपश्यः	अपश्यतम्	अपश्यत
उत्तम पुरुष	अपश्यम्	अपश्याव	अपश्याम

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
मध्यम पुरुष	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
उत्तम पुरुष	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
मध्यम पुरुष	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
उत्तम पुरुष	पश्यानि	पश्याव	पश्याम

4. अस् धातु (होना to be) परस्मैपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लङ्लकारः (अनद्यतन भूतकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

विधिलिङ् (चाहिए)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

लोट्लकारः (अनुज्ञा)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

5. लभ् धातु (पाना to obtain) आत्मनेपदी

लट्लकारः (वर्तमानकाल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते
मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लृट्लकारः (भविष्यत् काल)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे